International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-6, Issue-1 January – 2019
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

भारत–चीन संबंध : दक्षिण चीन सागर विवाद के विशेष संदर्भ में सामान्य अवलोकन

रमेश कुमार
शोधार्थी
राजनीति विज्ञान विभाग,
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय,
जोधपुर (राज.)।
Email-ramprabhu151@gmail.com

दक्षिण चीन सागर का विस्तार मसलन 8,00,000 स्क्वायर कि.मी. तक है। इसके समुद्री ठिकानों पर तकरीबन एशिया के महत्त्वपूर्ण देशों का ठिकाना है या कई शक्तिशाली देश स्थित हैं। फिलिपींस, मलेशिया, ब्रुनई, इंडोनेशिया, सिंगापुर और थाईलैंड, कंबोडिया, वियतनाम और चीन इसके महत्त्वपूर्ण सदस्य हैं। इस तट के इर्द–गिर्द बसे देशों का मुख्य आहार मछली है। भारत का 55 प्रतिशत व्यापार इसी समुद्री रास्ते से होता है। महत्त्वपूर्ण देशों के लिए भी यह मार्ग व्यापार का मुख्य मार्ग है। इस क्षेत्र में वर्चस्व के संघर्ष के पीछे दो महत्त्वपूर्ण कारण हैं। पहला आर्थिक है। इसके अंतर्गत ऊर्जा और तेल के नए क्षेत्रों की खोज और उसका व्यापार करना महत्त्वपूर्ण माना जा सकता है। दूसरा, संप्रभुता की लड़ाई है। हर देश अंतरराष्ट्रीय समुद्री कानून को ताक पर रखकर अपनी मनमानी करना चाहता है। इस मुहिम में चीन अपनी शक्ति और सैनिक ताकत के कारण सबसे आगे है। मुख्यतः साऊथ चाईना के अंतर्गत ताइवान स्ट्रेट जो उत्तरी मुहाने पर है और मलक्का स्ट्रेट पूरी दुनिया को समुद्री मुहाने से जोड़ते हैं। इस कारण तकरीबन इनके इर्द–गिर्द देशों की आपस में रस्साकसी चल रही है।[1] सिंगापुर और मलेशिया के बीच पिसांगद्वीप और पुलाऊबाटू पुतेह द्वीप जो मलक्का स्ट्रेट से सटे हुए हैं, को लेकर संप्रभुता की लड़ाई चल रही है। चीन, वियतनाम और ताइवान पाराशेल जिसके अंतर्गत तकरीबन 15 द्वीप हैं, को लेकर मालिकाना हक की लड़ाई वर्षों से चल रही है। 1974 में चीन ने इन द्वीपों पर जबरन अपना झंडा गाड़ दिया। इसके बावजूद वियतनाम अपनी जिद्द पर अड़ा हुआ है। दूसरी तरफ ताइवान भी संघर्ष की होड़ में है। इस पूरे तटवर्ती इलाकों में 52 से ज्यादा द्वीप हैं। जिसमें से चीन का आधिपत्य 7 पर है। वियतनाम के कब्जे में 40 से ज्यादा द्वीप हैं। फिलिपींस के हक में 9 और शेष मलेशिया और बुनई के प्रभाव में हैं।

चीन ने दक्षिणी चीन सागर में विवाद खड़ा करके दक्षिण एशिया के कई देशों को नाराज कर दिया है। चीन जबरदस्ती दक्षिण चीन सागर में मानव निर्मित दीप बनाने में लगा हुआ है। ताजा विरोध के बाद फिलहाल चीन ने अपनी कार्रवाई रोक दी है लेकिन भविष्य में चीन ने फिर से आसपास के देशों से तनाव बढ़ने का संकेत दे दिया है। चीन की ताजा कार्यवाही पूरे दक्षिण पूर्व एशिया के व्यापारिक मार्ग पर कब्जा करने की रणनीति है। इससे दुनिया के कई बड़े देश भी नाराज हो गये है, जिसमें अमेरिका और आस्ट्रेलिया भी शामिल है।[2]

दक्षिण चीन सागर हाल ही में चीन ने स्पार्टली आइलैण्ड के आसपास मानव निर्मित द्वीप बनाने शुरू किए थे। स्पार्टली आईलैण्ड एक विवादित क्षेत्र है जिस पर फिलिपींस, मलेशिया, वियतनाम आदि देश भी अपना दावा जताते रहते है। इस आईलैण्ड को लेकर पिछले कई सालों से चीन का विवाद कई देशों से हुआ है। चीन फिर भी शरारत करने से बाज नहीं आता है। हालांकि वर्तमान में अमेरिका के कड़े विरोध के बाद चीन ने अपने काम को रोक दिया है लेकिन चीनी कार्यवाही से आसपास के देशों की सुरक्षा भी खतरे में है। इससे भारत जैसे राष्ट्र को भी भारी खतरा है जिसके दक्षिण चीन सागर में व्यापारिक हित है। मलेशिया में आसियान देशों के विदेश मंत्रियों की बैठक में चीन की इस कार्यवाही के बाद तनाव बढ़ गया।[3]

दक्षिण चीन सागर में चीन के हित जगजाहिर है। चीन कई कारणों से इस पर अपना कब्जा चाहता है। दक्षिण चीन सागर ऊर्जा का भारी खजाना है। इसमें जहां गैस का भारी रिजर्व है वहीं 200 विलियन बैरल तक तेल का रिजर्व भी है। अगर अन्तराष्ट्रीय नियमों के मानकों को माने तो हर राष्ट्र की समुद्री सीमा तय है और इस समुद्री सीमा में कोई मुल्क अपने आर्थिक जोन विकसित कर सकता है। इसी आधार पर दक्षिण चीन सागर के अंदर ऊर्जा स्रोतों का खनन जब कोई देश करता है तो चीन इसका विरोध करता है। चीन का विवाद दक्षिण चीन सागर में गैस और तेल खनन को लेकर वियतनाम से हुआ। चीन हमेशा से वियतनाम के समुद्री क्षेत्र में अपना दावा जताता रहा है। जबकि वियतनाम ने इस क्षेत्र में खनन के लिए भारतीय तेल कम्पनियों से समझौता किया है। भारतीय तेल कंपनी ओएनजीसी इस क्षेत्र में पांच ब्लॉक में खनन का काम कर रही है। दक्षिण चीन सागर के ऊर्जा स्रोतों को लेकर चीन का विवाद फिलिपींस, मलेशिया समेत कई और देशों से है।

चीन अपना प्रभुत्व जमाने के लिए एयर ट्रैफिक में बाधा डाल रहा है। इसके लिए चीन अंतर्राष्ट्रीय कानूनों का उल्लंघन भी कर रहा है। चीन की प्रभुत्ववादिता का विरोध अमेरिका ने खुलकर किया है। अमेरिकी विदेश मंत्री जान केरी ने कहा कि चीन इस क्षेत्र में व्यापारिक जहाजों के आने जाने पर रोक

लगा रहा है। वहीं एयर ट्रैफिक रोकने की भी कोशिश कर रहा है। जबकि जहाजरानी और एयरट्रेफिक की आजादी अंतर्राष्ट्रीय सामुद्रिक कानूनों के तहत है। चीन की इस कार्यवाही का सीधा असर भारत पर भी है क्योंकि चीन के व्यापारिक रिश्ते पूर्वी एशिया के कई राष्ट्रों से है जबकि चीनी कार्यवाही से भारत का व्यापार सीधे प्रभावित होता है। यहीं कारण है कि मलेशिया में विदेश मंत्रियों के सम्मेलन में भाग लेने गए भारतीय विदेश राज्य मंत्री वी.के. सिंह ने कहा कि वो दक्षिण चीन सागर में आशियान देशों की चिंता से सहमत है।[4]

दक्षिण चीन सागर व्यापारिक दृष्टि से बहुत अधिक महत्वपूर्ण है। इस रास्ते प्रतिवर्ष 5 ट्रिलियन डालर मूल्य के सामान का आवागमन होता है। इसमें दुनिया के तमाम राष्ट्रों की हिस्सेदारी है। इसमें जापान, अमेरिका, आस्ट्रेलिया से लेकर आशियान देशों की भागीदारी है। उन्हें यह भय हे कि दक्षिण चीन सागर में चीनी गतिविधि के कारण व्यापारिक आवागमन प्रभावित होगा। कल को चीन अपना दबदबा बनाने के लिए दूसरे राष्ट्रों के व्यापारिक हितों को चोट भी पहुंचाएगा। चूंकि दक्षिण चीन सागर का व्यापार अगर प्रभावित होता है तो इसका सीधा प्रभाव प्रशांत महासागर, हिन्द महासागर और अरब सागर के व्यापारिक मार्गो पर भी पड़ेगा। पूर्वी एशिया के कई राष्ट्र अपनी ऊर्जा जरूरतों के लिए फिलहाल अरब देशों पर निर्भर है। इसलिए दक्षिण चीन सागर में चीन का हस्तक्षेप अरब देशों के व्यापारिक मार्ग को भी प्रभावित करेगा।

स्वयं भारत को लग रहा है कि चीन सामुद्रिक व्यापारिक मार्गों पर कब्जा कर एक चीनी सर्कल बनाने की कोशिश कर रहा है। जबकि ये सामुद्रिक व्यापारिक मार्ग अंतर्राष्ट्रीय कानूनों के हिसाब से नियमित होते है। चीन ने श्रीलंका में एक बंदरगाह विकसित करने की कोशिश की है। इस बंदरगाह पर स्थायी तौर पर चीनी लोगों को बिठाने की योजना है। इसके माध्यम से चीन हिन्द महासागर के महत्वपूर्ण मार्ग पर कब्जा करेगा। वहीं अरब सागर और फारस की खाड़ी तक पहुंचने के लिए एक और रास्ता चीन ने ढूंढा है, यह रास्ता पाकिस्तान का है। पश्चिमी चीन से लेकर पाकिस्तान के बलूचिस्तान के ग्वादर तक आर्थिक कॉरिडोर की योजना इसी खेल का हिस्सा है। ग्वादर पोर्ट पर पहले ही पाकिस्तान ने चीन को सोंप दिया है। यहां पर चीनी नौसेना को स्थायी तोर पर बिठाए जाने की योजना है। इससे चीन सीधे तौर पर अरब सागर और फारस की खाड़ी तक अपनी सैन्य ताकत बढ़ाने में सफल हो जाएगा। यह सीधे तौर पर भारत, ईरान और अरब राष्ट्रों के लिए सामरिक और व्यापारिक चुनौती है लेकिन पश्चिम राष्ट्रों की समस्या इसके अलावा और भी है। एक महत्वपूर्ण सामुद्रिक व्यापारिक मार्ग

अदन की खाड़ी से जाता है। इस क्षेत्र में इस्लामी आतंकवाद मुख्य चुनौती है। इस रूप के दोनों तरफ इस्लामिक आतंकी बैठे है जो इस मार्ग को कभी भी प्रभावित कर सकते है।

दक्षिण चीन सागर से लेकर हिंद महासागर और अरब सागर तक चीन अपने हिसाब से सामुद्रिक रास्तों को अपने नियन्त्रण में लेना चाहता है। यह यूरोप और अमेरिका एवं दुनिया के तमाम राष्ट्रों को भारी चुनौती है। अमेरिकी राष्ट्रपति आने वाले समय में इस समस्या को समझ रहे है। यहीं कारण है कि उन्होंने अरब दुनिया में परम्परागत विरोधी ईरान से समझौता किया ताकि अदन की खाड़ी से होकर जाने वाले व्यापारिक मार्ग सुरक्षित रहे। वहीं अफ्रीका के कुछ राष्ट्रों के साथ अच्छे संबंध अमेरिका बनाना चाह रहा है क्योंकि अदन की खाड़ी का व्यापारिक मार्ग में अफ्रीकी देशों का भी हस्तक्षेप है।[5]

सिंगापुर के रक्षामंत्री नग इंग हेनने के अनुसार कि, ''भारत को दक्षिण चीन सागर में एक बड़ी भूमिका अदा करनी चाहिए। सन् 2011 के पश्चात् इसी तरह के विचार वियतनाम और फिलीपींस के नेताओं ने भी व्यक्त किये है। दक्षिण पूर्वेशिया के नेताओं द्वारा उस क्षेत्र के सुरक्षा मामलों में भारत की भागीदारी के लिए उसे दिये गये 'निमंत्रण' का मतलब है दक्षिण पूर्वेशिया में महाशक्ति के रूप में भारत का उदय और एशिया में महाशक्ति के रूप में भारत का उदय हो रहा है। दक्षिण पूर्वेशिया महत्वपूर्ण है क्योंकि यह एक ऐसा महत्वपूर्ण रणनीतिक क्षेत्र है जो हिंद और प्रशान्त महासागरों को आपस में जोड़ता है और जिसमें कुछेक बेहद महत्वपूर्ण समुद्री चोक पॉइंट्स है और चीन के उदय के संदर्भ में यह ऑर्डर मेकिंग का स्थान बन सकता है। जब अमेरिका ने अपने 'केंद्र बिंदू/पुर्नसंतुलन' की घोषणा की थी, उस समय अमेरिका के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार थॉमस डोनिलन ने स्पष्ट कर दिया था कि, ''केंद्रबिंदू का मतलब केवल एशिया का ही पुर्नसंतुलन नहीं है, बल्कि इसमें 'एशिया के अंदर' का पुर्नसंतुलन भी आ जाता है क्योंकि अमेरिका ने 'दक्षिण पूर्वेशिया और आसियान पर भी नये सिरे से ध्यान देना शुरू कर दिया है।

दक्षिण पूर्वेशिया में भारत का बढ़ता प्रभाव बहुत महत्वपूर्ण है और इससे महाशक्ति के रूप में उसके उदय का संकेत भी मिलता है। दो ऐसे मुख्य कारण है, जिनसे दक्षिण पूर्वेशिया में भारत उदय से सार्थक परिणामों की संभावना है। पहला कारण तो यह है कि दक्षिण पूर्वेशिया में भारत और उसके सबसे नजदीकी पडोसियों के बीच कोई सीमा विवाद नहीं है। पूरे दक्षिण पूर्वेशिया में केवल म्याँमार ही ऐसा देश है, जिसके साथ भारत की स्थल सीमा जुड़ी हुई है और जिसका सीमांकन सन् 1937 में ब्रिटिश उपनिवेशवादी शासन द्वारा कर दिया गया था। म्याँमार, थाईलैण्ड और इण्डोनेशिया तीन ऐसे दक्षिण पूर्वेशियाई देश है, जिनके साथ भारत की समुद्री सीमा जुड़ी हुई है। जिसका निर्धारण सन् 1978 में त्रिपक्षीय समझौते द्वारा कर दिया गया था, जबकि म्याँमार के साथ भारतीय समुद्री सीमा का निर्धारण

सन् 1987 में किया गया था। चीन ने भारत को चेतावनी दे डाली कि अगर भारत साऊथ चाईना में अपनी सामरिक विस्तार की योजना बना रहा है तो भारत के लिए नई मुश्किलें पैदा हो सकती हैं। दरअसल, चीन इन समुद्री लहरों को अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा कवच के रूप में देखता है। पिछले दिनों भारत की महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय कंपनी ओ.एन.जी.सी. विएतनाम की कंपनी पेट्रो विएतनाम के साथ मिलकर तेल और खनिज संपदा की खोज में खुदाई कर रहे थे। लेकिन दुर्भाग्य था कि इस खनन में दोनों कंपनियों को सहायता नहीं मिली। दूसरी तरफ चीन के तल्ख व्यवहार और टिप्पणी ने परिस्थिति को और पेचीदा बना दिया। जबकि भारत और विएतनाम ने अपने संयुक्त बयान में यह बात कही कि यह प्रयास महज व्यापारिक था। इसके द्वारा किसी भी तरह से सामरिक विस्तार की कोशिश नहीं की जा रही थी। लेकिन चीन की बेताबी और अनावश्यक उग्रता इस क्षेत्र की गंभीर विशेषता को चिह्नित करता है। साऊथ चाईना के समुद्री इलाकों में न केवल भारत की विशेष रुचि है बल्कि अमेरिका सहित पूरे एशिया पैसिफिक के देश इन समुद्री लहरों से पूरी तरह गूंथे हुए हैं।[6]

भारत ने स्पष्ट शब्दों में अंतरराष्ट्रीय समुद्री कानून के दायरे में यह बात कही कि जहाँ पर भारत और विएतनाम के द्वारा संयुक्त रूप से खनन किया जा रहा था वह इलाका विएतनाम के अंतर्गत आता है न कि चीन के दायरे में। 2020 में एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में यह बात बखूबी रखी गई थी। साऊथ चाईना में उत्खनन के लिए भारत आसियान या पैसिफिक देशों के साथ मिलकर ऐसा कर सकता है। दरअसल, समस्या की जड़ चीन की आक्रामक राष्ट्रवादी प्रवृत्तियां है। विगत में चीन ने कभी भी साऊथ चाईना सी को राष्ट्रीय सुरक्षा मानकों से जोड़कर नहीं देखा। अब चीन तिब्बत, ताइवान की तरह साऊथ चाईना सी को भी अपने अभिन्न सुरक्षा कवच का अंग मानता है। अमेरिका भी चीन की दलील को मानने से इनकार करता है। क्योंकि चीन के आक्रामक रुख से अमेरिकी हितों का नुकसान हो रहा है, जो खुला स्वच्छंद समुद्री तरंग है वह समान रूप से अंतरराष्ट्रीय कानून के तहत सबके लिए खुली हुई है।[7]

भारत के लिए साऊथ चाईना सी अत्यंत ही महत्त्वपूर्ण है। यह महत्त्व केवल आर्थिक विकास या व्यापार तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके सामरिक पक्ष भी हैं। यह मार्ग ही हिंद महासागर और पैसिफिक महासागर को जोड़ता है। इसलिए इस मार्ग पर बसे हुए उन तमाम देशों के साथ भारत का द्विपक्षीय या बहुपक्षीय संबंध इस इलाके में न केवल शांति से जुड़ी हुई है। बल्कि इस बात पर निर्भर करता है कि इस मार्ग पर किसी देश दादागिरी न हो। तकरीबन भारत का 55 प्रतिशत व्यापार आसियान देशों

के साथ साऊथ चाईना सी के माध्यम से होता है। भारत मंगलोर में ऊर्जा की आपूर्ति जापान और कोरिया के माध्यम से इसी मार्ग के जरिए करता है।[8]

उल्लेखनीय है कि भारत और आसियान देशों के बीच का समुद्री व्यापार कई विसंगतियों का शिकार बना हुआ है। मुस्तैदी और सशक्ति पर्यवेक्षण की कमी की वजह से कई बार समुद्री लुटेरों, आतंकियों और मादक द्रव्य व्यवसायियों का जाल भारतीय हितों को नुकसान पहुंचाते हैं। यह सब कुछ इसलिए होता है कि भारत आसियान देशों के साथ मिलकर नौसैनिक ढाँचे को मजबूत नहीं कर पाया है। पिछले कुछ वर्षों में भारत ने कई आसियान देशों के साथ मिलकर संयुक्त नौ सैनिक अभ्यास को अंजाम देने की कोशिश की। लेकिन इन प्रयासों को चीन अपने सुरक्षा–व्यवस्था में सेंध मानने लगता है। फिर चीन भारतीय सुरक्षा को चुनौती देने के लिए अरुणाचल और कश्मीर में नई–नई मुसीबतें खड़ा करना शुरू कर देता है। इसलिए बात बिगड़ जाती है। फरवरी 2010 में भारत ने अंडमान निकोबार में नौसैनिक अभ्यास के लिए आसियान देशों को आमंत्रित किया था। इस संयुक्त प्रयास को मिलान अभियान के नाम से जाना जाता है। इसके द्वारा समुद्री ठिकानों में तस्करी, लुटेरों और आतंकवादियों से लड़ने की प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई थी। उल्लेखनीय है कि मलेशिया को भारत पहले प्रशिक्षण दे चुका है। कई महत्त्वपूर्ण तकनीकी मदद भी भारत इन देशों को पहुंचा चुका है।

संदर्भ सूची–

1- गार्बर, जे. डब्ल्यू., ''प्रोटेक्टेड कन्टेस्ट; साइनो इण्डियन कॉन्फिलिक्टस इन द ट्वन्थीज सेन्चुरी'', ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, 2011, पृ. 07

2- क्लूनबर्ग एस. और चक्रवती ए., ''ट्रांजिसन एण्ड डेवलपमेंट इन इण्डिया,'' मार्गलेज, न्यूयॉर्क, 2013, पृ. 22

3- अमरावती मल्लपा, ''चाइना, इंडिया एण्ड जापान, दॉ रिव्यू ऑफ देकर रिलेशन्स, ए. बी. डी. पब्लिशर्स, जयपुर, 2004, पृ. 61

4- भारद्वाज. एस.एम, ''भारत–चीन सम्बन्ध – एक अवलोकन'' न्यू प्रभात प्रकाशन, मेरठ 2004 पृ. 17

5- पंत पुष्पेश, '21वीं सदी में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध'' मैग्रा प्रकाशन, नई दिल्ली–2015 पृ. 112

6- अभिनंदन. नेताजी, ''चीन के साथ भारत के संबंधः बाधाएँ एवं चुनौतियाँ,'' वर्ल्ड फोकस, सितम्बर 2013, पृ. 127

7- पांडा. स्नेहलता, अभयमुख भारत–चीन संबंधः विश्वास की कमी की मिसाल,'' वर्ल्ड फोकस, मार्च 2014, पृ. 98

8- हिन्दुस्तान टाईम्स, जनवरी 2022, पृ. 78

9- इण्डिया टूडे, दिसम्बर 2021, पृ. 77